21-3-67 21-3-67 ओम शान्ति रात्रीक्लास

जयपुर में बच्चे पूछते हैं कि नाम क्या लिखें? वास्तव में यह जो गीता का भगवान शिव है और गीता का भगवान कृष्ण है उन दोनों का कन्ट्रास्ट दिखाना चाहिये। शिव की गीता से सेकेंड में सर्वगतिदाता। कृष्ण की गीता सेकेंड्सवासी। वो एक सेकेंड में यह आधा कल्प में। यह समझने की बातें हुई ना। प्रदर्शनी में भी यह लगा सकते हैं। दो गीता बना कर उस पर कृष्ण का चित्र और उस पर शिव का, फिर लिख देना चाहिये शिव की गीता से एक सेकेंड में जीवनमुक्ति। वो स्वर्ग की बादशाही। 2500 वर्ष में नर्क की बादशाही। वो नर्कवासी स्वर्गवासी। हैल हैवन। ऐसे लिख सकते हो तो बस मनुष्य गजब खावे। कृष्ण की गीता सुनते-2 मनुष्य तमोप्रधान बन गये। शिव की गीता सुनने से मनुष्य सतोप्रधान बन रहे हैं। अनेक पुआइन्टस निकलनी हैं जो कि बड़ी लिख सकते हैं। वो झूठी गीता से रावण राज्य और सच्ची गीता से राम राज्य। वो सेकेंड में वो आधा कल्प में। कृष्ण की गीता से भी हैल तो उनके सब बाल बच्चे से भी हैल। दुर्गति ही होती है ना। आधा कल्प लिये दुर्गति आधा कल्प लिये सदगति एक सेकेंड में। ऐसे-2 विचार सागर मंथन कर पुआइन्टस निकालनी होती है। गीता पढ़ते आये हैं परन्तु सदगति नहीं होती है। कृष्ण की गीता से दुर्गति शिव की गीता से सदगति। जैसे खेल रचाते वैसे ही बनाना है। है तो सारा ज्ञान भारतवासियों के लिये। बाप भी भारत में आते हैं। गीता से ही देवी देवता धर्म की स्थापना हुई है। यह भी कोई जानते नहीं हैं। बिल्कुल तुच्छबुद्धि हैं। यह है नई दुनिया के लिये नई ही बातें। ऊंच ते ऊंच भगवान है वो राईट या कृष्ण राईट? कृष्ण को राईट रख नहीं सकते हैं। अगर कृष्ण के लिये कहें कि कहा मन्मनाभव तो भी कि अपने लिये ही कहते हैं कि एक मुझ भगवान को याद करो। जो नालेज सुनाई गई है वो और को भी सुना कर रस्ता बताने लग जाना है। यह भी समझेंगे नहीं कि विनाश होना है। कहेंगे फिर विनाश होगा तो सबका ही होगा ना। उससे कोई सवाल ही नहीं उठता। अगर कोई को निश्चय हो जावे। समझो आज हीरालाल को निश्चय हो जावे सो क्या। फिर उनको देख कोई दूसरे जास्ती समझने आवेंगे। इसमें भी मेहनत चाहिये। बहुत सहज भी है। तो डिफीकल्ट भी है। कोई तो समझेंगे बड़ी सहज नालेज है कोई तो समझेंगे नहीं। बुद्धि की ही सारी बात है। कोई की बुद्धि अच्छी होती है तो पढ़ कर ऊंच पद पावेंगे। फिर तकदीर भी कही जाती है। कर्मों का हिसाब किताब भी कहा जाता है। इसलिये हिसाब किताब चुक्तु करना है। पतित से पावन बनना है। याद की बहुत दरकार है। बाप से बड़ी ऊंच नालेज मिलती है। दूसरा कोई यह ज्ञान दे नहीं सकते हैं। एक वो ही ज्ञान सागर पतित पावन दुख हर्ता सुख कर्ता कहा जाता है। बच्चे समझते हैं कि हम भी पत्थर बुद्धि थे अब पारस बुद्धि बन रहे हैं। परन्तु जब बुद्धि में बैठे तब ही तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बनें ना। बहुत सहज डायरेक्शन्स मिलती है। मत पर चल कर ऊंच ते ऊंच बनना है। कोई की तकदीर में नहीं है तो चल भी नहीं सकते हैं। कोई कहते हैं बुद्धि में नहीं बैठता है। पत्थर बुद्धि होंगे कोई की बुद्धि में नहीं बैठेगा तो बाप भी उसमें क्या करेंगे? यह तो पढ़ने वाले पर की बात है ना।

23-3-67: रात्री क्लास - औपीनियन्स भी छपने हैं। और सब सेन्टरों पर ब्राह्मण कितने हैं उनकी भी लिस्ट होनी चाहिये। उनमें भी जो पवित्र रहते हैं उनका नाम ही आना बहुत है। बस कई बच्चे हार जाते हैं। युद्ध का मैदान है। यह है देह-अभिमान। यही रावण राज्य है ना। देह-अभिमान आने से ही काम विकार की सवारी करता है। सबसे कड़ा है काम विकार। 5, 10 वर्ष भी रह फिर भी हार जाते हैं वो है देह-अभिमान उससे की सारी की कराई कमाई चट हो जाती है। फिर वो ज्ञान भी नहीं दे सकते हैं। अन्दर में दिल खाती रहेगी। फिर बाप उसमें क्या कर सकते हैं। अपने पैर पर आप ही कुल्हाड़ा लगाते हैं। एक बार गिरते हैं तो फिर याद बिल्कुल कट जाती है। जो यह सजा मिल जाती है। उनके लिये का इलाज ही नहीं है। बाप उसका इलाज नहीं कर सकते हैं। सारा मदार है याद की यात्रा पर। देह अभिमान में आने से कोई

नां कोई विकर्म हो जाता है। यह होती रहेंगी जब तक कि कर्मातीत अवस्था हो। परन्तु यह चोट सबसे खराब है। उनकी पूरी सम्भाल करनी है। ब्राह्मणों का [illegible] कुल है नां। वो तो घर को कलंक लगाते है। जितना पवित्र रहते उतना ही बाप की मदद करते है। गोया अपने की मदद करते है सारे विश्व की भी मदद करते है। बाप कहते है तुम पवित्र बनते हो तुम्हारे कारण ही पतित दुनियां का विनाश हो जाता है। क्योंकि तुम्हारे लिये पवित्र दुनियां चाहिये। गाया भी जाता है कि भारत वाइसलैस था। दूसरा कोई खण्ड ही नही था। ऋषी मुनी आद सब नेती-2 करते आये है। रचता और रचना के आद मध्य अन्त को नही जानते है। अब बाप कहते है कि तुम संगमयुगी ब्राह्मण ही जानते हो। तुम ही फिर दैवी देवता बनते हो। राज्य भी भारत में ही करते हो। भारत पर ही बहुतों ने चढ़ाई की है। भारत ने दूसरे कोई देश पर चढ़ाई नही की। क्योंकि भारत ऊंच धर्म का है नां। इस पर तो मुसलमानों ने क्रिश्चनों ने भी चीनियों ने भी की है। भारत वासियों ने किसी पर भी चढ़ाई नही की है। तुम भारत वासी बहुत बड़े हो। प्राचीन होने कारण भारत खण्ड ही बड़ा होना चाहिये। मनुष्य बहुत है तो जमीन भी जास्ती चाहिये नां। वास्तव में है ही आदी सनातन दैवी देवता धर्म। परन्तु पवित्र नां होने कारण अपने को देवता कह नही सकते है। तुम ही पूज्य और पुजारी बने हो। यह सब बाते भक्ति मार्ग वालों के पास नही है। अब तुम्हारी बुद्धी में है। तुम जानते हो यह चढ़ने का मार्ग है। वो उतरने का मार्ग है। चढ़ती कला का मार्ग बाप ही बताते है। वो है अन्धे की औलाद अन्धे। अन्धा बनाता है रावण। सजा बनाने वाले का नाम युधिष्ठिर रख दिया है। यह नाम है सब भक्ति मार्ग के। बाकी यह नाम कोई है नही। अन्धेरी रात में ठोकर ही खाते रहते है भगवान को ढूंढने के लिये। कई लोग कहते है कि परमात्मा को पाने के अनेक रास्ते है। परन्तु ऐसे है नही। बाप तो एक बार ही भारत में आते है। तुम जानते हो कि हम बैठे बच्चे ही बाप के मददगार बनते है। तो पवित्रता की प्रतिज्ञा उपर पक्का रहना चाहिये। योग पूरा रहे पवित्र रहे तो राजाई पद पा सकते है। परन्तु बीच में माया के विघ्न पड़ते है। स्त्री मोहित करती है। स्त्री को मोहनी मूर्त कहा जाता है। इकठे रहते पवित्र रहे इसमें ही मेहनत है। बाप कहते है गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये सर्विस करो। समझाना बहुत सहज है कि भारत पहले-2 सतयुग था। भारत सबसे पुराना है। फिर नया बनता है। तुम भी नये थे। सो फिर पुराने बने हो। नई दुनियां बेहद का बाप ही आकर बनाते है। यह मनुष्य सृष्टी है। सतयुग में भी मनुष्य सृष्टी है। परन्तु दैवी गुणों वाली है। इसलिये देवता धर्म कहा जाता है। पुरुषार्थ यही करना है कि ऊंच पद पावें। यह खुशी जरुर होनी चाहिये कि भगवान हमको पढ़ाते है। ब्र. प्राचीन बहुत बनती जावेंगी। नजदीक कुल होगा तो पास वाले सहज रीती से आकर पढ़ेंगे। तुम्हारी ही महिमा गाई हुई है शिव शक्ति भारत मातायें। भारत पवित्र प्रवृती मार्ग था। अब अपवित्र प्रवृती मार्ग है। फिर प्रवृती मार्ग वाला होगा। आत्मा कहती है इस समय हम पापी नीच है। कोई भी हमारे में गुण नही है। आत्मा ही आसुरी वा दैवीगुण धारण करती है। आत्मा को खुशी होती है कि बाप हमको पढ़ाते है। आत्मा ही शरीर दवारा पढ़ती है। रूह पढ़ाती है रूहों को। अब बाप आकर देहीअभिमानी बनाते है। बाप खुद कहते है बच्चे तुमको पावन बनना है। तुम ही पतित बने हो। वो तो समझते है कि आत्मा निर्लेप है। अनेक मत है नां। तो बाप बैठ बच्चों को समझाते है। प्रजापिता ब्रह्मा भी बापजी है सारी दुनियां का। पहले-2 तुम्हारा धर्म होता है। पहली बादशाही देवताओं की। फिर उनसे ही दूसरे धर्म निकलते है। कितना बड़ा बाबा है। उसके तुम सब बच्चे बहन भाई ठहरे नां। स्त्री पुरुष इकठे रह कर पवित्र रह नही सकते है। तो दृष्टी ऊंची चाहिये। ख्याली कहे तो उनको कहा जाव तुम तब क्यों भागते हो? तुम बच्चे बहुत पुण्य करते हो। यह है ज्ञान रत्नों का दान पुण्य। तुम बाप को तन मन धन सबकुछ दे देते हो। तो बाप फिर 21 जन्मों के लिये हैल्थ वैल्थ और हैप्पीनेस दे देते है। ओम